Editorial

उन्नत भारत के माध्यम से एक बेहतर विश्व व्यवस्था की सोच विकसित करना ...

१८वीं लोकसभा चुनाव में जनता ने अधिकारों का प्रयोग करते हुए एक मजबूत भारत के संकल्प को पुन: दोहराया है लेकिन संकल्प के साथ कई मौलिक संदेश भी अंकित है क्या राष्ट्रीय निर्माण की प्रक्रिया महज प्रधानमंत्री और मंत्रियों से बनती है, बिल्कुल नहीं । देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में समाज के भिन्न-भिन्न इकाइयों का अहम भूमिका होती है जो आपके माध्यम से बनकर तैयार होता है । आपकी सोच और सक्रियता उसको नीतियों में बदलती है और दुनिया के मंच पर भारत की पहचान के रूप में स्थापित होती है, - जैसे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बना । आज कई ऐसे पहल और आयाम की जरूरत है, इसके लिए आपकी भागेदारी सुनिश्चित होनी चाहिए ।

भारत के पुरातन इतिहास की चर्चा की जाए तो भारत के ट्रेड संबंध हड़प्पा के समय मेसोपोटामिया से लेकर अफ्रीकी देशो तक था । हड़प्पा संस्कृति के केंद्र बलूचिस्तान, पंजाब, सिंध और गुजरात हुआ करता था । पूरा मध्य एशिया भारत के साथ जुड़ा हुआ था । ईरान में भारतीय संस्कृति के अवशेष मिले हैं । डेक्कन क्षेत्र के जरिए पूरा पूर्वी एशिया भारत के व्यापार से बंधा हुआ था । व्यापार केवल सामान का नहीं होता था बल्कि विचारों का भी होता था । इसी तरह भारत से नेपाल और पुन: तिब्बत, चीन और पूर्वी एशिया में बौध और हिंदू संस्कृति का विस्तार हुआ । चीन के दो महत्वपूर्ण यात्री फाहियान और ह्वेनसांग भारत में ५वी और ७वी शताब्दी में आये और भारत को गुरु भूमि के रूप में स्वीकार किया । यही कारण है कि आधुनिक चीन कम्युनिस्ट देश होने के बावजूद और ईश्वर में विश्वास नहीं करने के बावजूद भारत को गुरु देश के रूप में मानते हैं ।

विश्व गुरु एक संकल्पना है, यह महज बोलने से या बयानबाजी से नहीं बनेगा । इसके लिए कई प्रयास करने होंगे । कुछ प्रयास हुए हैं, बहुत शेष हैं । नई शिक्षा नीति के जरिये हिंदी और भारतीय भाषाओं को बल मिला है । ग्रामीण परिवेश के उद्यमी बच्चों को लिए अवसर बने हैं, लेकिन अभी भी मंजिल कोसों दूर है । भारत की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करना हम सबका संकल्प है । एक सोने की चिड़िया मिट्टी की गुड़िया बन गयी । विदेशी ताकतों ने सबकुछ छिन लिया । लेकिन एक मजबूत और राष्ट्रवादी सरकार इस संकल्प को स्थापित करने की कोशिश २०१५ से शुरू कर दी । आज का दौर सबके लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण दौर है । अमृत काल में उन्नत भारत की छवि का रूपांकन हुआ, सब ने देखा । दुनिया ने देखा । उसी गति और निष्ठा के साथ हम अपने मुकाम पर पहुंच जाएंगे, यह विश्वास सबको है, लेकिन मेहनत और परिश्रम के बूते पर ही बात बनेगी ।

प्रधानमंत्री ने जो बात नालंदा के उद्घाटन में कहीं, उसको कैसे पूरे देश में लागू कर पाते हैं, वह एक गंभीर चुनौती है । प्रधानमंत्री ने कहा, "नालंदा केवल एक नाम नहीं है । नालंदा एक पहचान है, एक सम्मान है । नालंदा एक मूल्य है, मंत्र है, गौरव है, गाथा है ।"